

र. ब्या. केळकर; प्राचार्य, प्रगत कला महाविद्यालय, चितळेवाडा, चितळे पथ
अहमदनगर. 30/1/64

प्रिय हैदर,

मुझे हमेशा तेरी याद आती है। मेरे हृदय पर लगे तेरे लिये अचिरंत
जगार रबी गई है। 26 डिसेंबर 1960 को धूलिया के ककाध्यापक पारिवर्तन
मेरा व्यापार व्याप्त था। वहासे S.T. से लौटते समय दि 26 डिसेंबर को ठाणे
बस को बड़ा भोवठा अपघात हुआ। देव बजात कोड़े भी मृत्यु वश नहि हुआ।
काल आया था लेकिन समय नोडे! परमेश्वर की बड़ी कृपा है की मैं फिर
कला के क्षेत्र से काम कर सकू। मुझे 20 दिन तक रुग्णशाल्या पर रहना
पड़ा। मेरे सामने सब छात्रों की तसवीरे नजर अम्मी आयी। परमेश्वर के इस
कृपा की उपकार स्मृति के लिये 22 मे 1960 को (जब मुझे 60 साल पूरे
होते हैं) अंक कौटुंबिक समारोह मनारहे है। तैरु पर स्थिती की पुझे
बड़ी आवश्यकता थी। सब कर्तृत्ववान छात्रों का पूजन इस दिन मैं करता
याहता हू। मेरे भाग्य के तेरी और मेरे स्तुधा की मूलारवात बंबई में 10 अप्रैल
को हुई। मैं आधीकतम भाग्यवाली होता जो तुम दीनो मेरे यहाँ उस समारोह
मे शामिल हो सकते। तेरे बारे में मैंने 1959 में और 1960 में जो भाकीत किया
था वह सच हुआ। मुझे अत्यंत आनंद हुआ। काउंसिलर के लोटने के बाद तेरा जो
प्रदर्शन मैंने देखा था उससे कई गुने तेरा बंबई का प्रदर्शन अत्यंत

उद्धरण को है। मैंने आप्रियास में लिखा है "The
 Paintings are worth reading." तुम्हारी
 पुस्तक की पारिषद के लिखे लेखन की यात्रा अच्छी तरह
 और रविनूकुंज हो। मेरा छोटा सा कोलेज नुपदोना
 को आओवाह। मेरा एक विद्यार्थी लंडन में है। आर्थिक
 जरूरतों को रोकना है। पेंटर भौंड और डिप्लोमा
 बहा पढता है। नर तुंडा मिलना चाहता है। वीकेंड
 या छुट्टी में पारिस आता है। श्री एस. आर. पुनवर्णे
 उसको बुझना है।

श्रीमती स्मै. डाम्पे रडा को शुभाशीर्वादः.

If you can
 spare a small
 original painting
 of yours for me
 I shall be grateful (R. B. Kelkar)



Shri S. H. Razza.
 Raj Mala, Flat No 603
 87 B. Napean Sea Road
 BOMBAY
 BOMBAY 6